Marking Scheme

BSEH Practice Paper (March-2024)

CLASS: 10th (Secondary) (Maximum Marks: 20) **Code: D**

हिंदुस्तानी संगीत वादन

(Hindustani Music Instrument) Melodic

खंड (1) वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न

Section (1) Objective type questions

(½ **X 10 = 05**)

....

प्र01 तानपूरे का पहला तार मिलाया जाता है ? ½

उ0 (D) मंद्र प

प्र02 तानपूरे का दूसरा तार मिलाया जाता है ? ½

उ0 (B) मध्य सा

प्र0 3 तानपूरे का तीसरा तार मिलाया जाता है? ½

उ0 मध्य सप्तक के सा स्वर से।

प्र0 4 तानपूरे का चौथा तार मिलाया जाता है ? ½

उ0 मंद्र सप्तक के सा़ स्वर से।

प्र0 5 अभिकथन **(A):** राग खमाज का सवांदी स्वर नि है? ½

कारण **(R):** राग खमाज का वादी स्वर ग है ?

उ0 (**A**) **A** और **R** दोनों सत्य हैं तथा **R**, **A** की सही व्याख्या है।

प्र0 6 अभिकथन **(A):** रूपक ताल में 07 मात्राएं हैं। ½

कारण **(R):** एक ताल में छः विभाग होते हैं।

उ0 (**B**) **A** और **R** दोनों सत्य हैं तथा **R**, **A** की सही व्याख्या नहीं है।

प्र0 7

कॉलम – 01	कॉलम – 02
1. सर्कीर्ण राग **2.** रागों का **3.** अलकारों **4.** शुद्ध राग	**A.** जिन रागों में किसी और राग की छाया नहीं आती हैं? **B.** जिन रागों में शुद्ध और छायालग रागों का मिश्रण मिलता हैं **C.** लक्षण गीत से किसका पूरा परिचय मिलता है। **D.** किससे स्वरों का अभ्यास भी हो जाता है।

उ0 (4) **A-4 B-1 C-2 D-3** ½

प्र0 8 ½

कॉलम – 01	कॉलम – 02
1. 06	**A.** एक ताल
2. 07	**B.** चौताल
3. 12	**C.** रूपक ताल
4. 12	**D.** एक ताल विभाग

उ0 (4) **A-4 B-1 C-2 D-3**

प्र0 9 मेडोलिन में दो तारें होती हैं। (सही /गलत) ½

उ0 गलत

प्र0 10 क्या दिलरूबा तत वादय माना जाता है? (सही/गलत) ½

उ0 सही

खंड (2) अति लघुउत्तरात्मक प्रकार के प्रश्न

Section (2) Very short answer type questions

(½ X 08 = 04)

प्र0 11 राग भीमप्लासी का सवांदी स्वर का नाम बताएं? ½

उ0

प्र0 12 राग भीमप्लासी की जाति का नाम बताएं? ½

उ0

प्र0 13 राग भीमप्लासी के आरोह के स्वरों का नाम बताएं? ½

उ0

प्र0 14 राग भीमप्लासी के अवरोह के स्वरों का नाम बताएं? ½

उ0

प्र0 15 चौताल में कितनी मात्राएं हैं। ½

उ0

प्र0 16 राग भीमप्लासी के पकड़ के स्वरों का नाम बताएं? ½

उ0

प्र0 17 राग खमाज का सवांदी स्वर का नाम बताएं? ½

उ0

प्र0 18 राग खमाज के आरोह के स्वरों का नाम बताएं? ½

उ0

....

खंड (3) लघुउत्तरात्मक प्रकार के प्रश्न

Section (3) short answer type questions

(**2 X 03 = 06**)

....

प्र0 19 पं शिव कुमार के जीवन परिचय बारे वर्णन करें। 2

उ0 पं शिव कुमार जी का संगीत से सम्बधिंत किए गए कार्यो पर विवरण करने पर पूरे अंक दिये जांए।

पंडित शिव कुमार जी का जन्म 13 जनवरी 1938 को जम्मू में हुआ था। इनके पिता का नाम पंडित उमादत शर्मा है जो जाने–माने गायक थे। सिर्फ पांच साल की आयु में ही पंडित शिव कुमार ने संगीत सीखना शुरू कर दिया था, पिताजी से उन्होनें स्वर और तबला दोनो की शिक्षा लेनी शुरू कर दी। सिर्फ 13 साल की आयु में संतुर सीखना शुरू कर दिया। पंडित शिव कुमार ने देश में संतूर लोकप्रिय शास्त्रीय वाद्य यंत्र बनाया है इसलिए इनका पूरा श्रेय इन्ही को ही जाता है। वर्ष 1955 में मात्र 17 साल की आयु में मुंबई में संतूर वादन का पहला शो किया। जिसके बाद संतूर की धुन लोगों का पसंद आने लगी। इसके बाद इन्होनें साल 1956 में फिल्म ''झनक–झनक पायल बाजे'' के लिए संगीत कंपोज किया था। पंडित शिव कुमार शर्मा को भारत सरकार द्वारा 1991 में पदम श्री और 2001 में पद्म विभूषण से नवाज़ा गया है। इसके साथ ही 1985 में संयुक्त राज्य बाल्टीमोर की मानद नागरिकता प्रदान और 1986 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पंडित शिव कुमार शर्मा जी 10 मई 2022 को 84 साल की आयु में कार्डियक अरेस्ट की वजह से निधन हो गया। जिससे संगीत जगत में बहुत बडी हानि पहुची।

(अथवा)

(OR)

प्र0 19 संगीत ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' का सम्पूर्ण परिचय दे।

उ0 चौथी शताब्दी के लगभग भरतमुनि ने नाटयशास्त्र नामक ग्रन्थ लिखा। संगीत के इतिहास में यह पहला ऐसा ग्रन्थ है, जिसके अन्तिम छः अध्यायों में संगीत सम्बन्धी महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाला गया है। इसके अन्तर्गत वर्णित अधिकांश तथ्य आज भी शत–प्रतिशत सही माने जाते हैं। नाट्य शास्त्र के 28वें अध्याय में वाद्यों के प्रकार श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, जाति–भेद तथा उनके लक्षण ग्रह, अंश, न्याय, उपन्यास, अलपत्व, बहुत्व, षाडवत्व, औडवत्व आदि पर प्रकाश डाला गया है। 29वें अध्याय में वीणा, उनकी वादन–विधि जातियों के रसानुकूल प्रयोग का विवरण है। 30वें अध्याय में सुषिर वाद्यों का विवरण, 31वें अध्याय में कला, लय और विभिन्न तालों का विवरण दिया गया हैं। 32वें अध्याय में गायक–वादक के गुण ध्रव के 5 भेद, छनद आदि तथा 33वें अध्याय में अवनद्ध वाद्यों की उत्पति, भेद, वादन–विधि, वादकों के लक्षण आदि दिए गए है। इस प्रकार इन 06 अध्यायों में संगीत सम्बधीं जानकारी पूर्ण रूप से प्राप्त करवाने में संगीत ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' की बहुत महत्वता है।

प्र0 20 हरिप्रसाद चौरसिया के जीवन परिचय बारे वर्णन करें। **2**

उ0 पंडित हरिप्रसाद चौरसिया की जन्म तिथि के साथ उनकी संगीत शुरूआत का वर्णन करते हुए उनका संगीत के प्रति योगदान बताने पर पूरे अंक दिये जाए।

पंडित हरिप्रसाद चौरसिया जी का जन्म 01 जुलाई, 1938 को उतर प्रदेश के इलाहाबाद में हुआ था। इनके पिता पहलवान थे। उनकी माता का निधन उस समय हुआ जब वह पांच साल के थे। पंडित हरिप्रसाद चौरसिया बचपन गंगा किनारे बनारस में बीता। उनकी शुरूआत तबला वादक के रूप में हुई। अपने पिता की मर्जी के बिना ही पंडित हरिप्रसाद चौरसिया जी ने संगीत सीखना शुरू कर दिया था। वह अपने पिता के साथ अखाडे में तो जाते थे लेकिन कभी भी उनका लगाव कुश्ती की तरफ नहीं रहा। अपने पड़ोंसी पंडित राजाराम से उन्होनें संगीत की बारीकिया सीखी। इसके बाद बांसुरी सीखने के लिए वे वाराणसी के पंडित भौलानाथ प्रसाना के पास गए। संगीत सीखने के बाद उन्होनें काफ़ी समय ऑल इंडिया रेंडियो के साथ भी काम किया। पंडित हरिप्रसाद चौरसिया ने बांसुरी के जरिए शास्त्रीय संगीत को तो लोकप्रिय बनाने का काम किया ही, संतूर वादक पंडित शिव कुमार शर्मा के साथ मिलकर शिव हरि नाम से कुछ हिन्दी फ़िल्मों में मधुर संगीत भी दिया। पंडित हरिप्रसाद चौरसिया को कई अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से नवाजा गया। उनकों संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार 1984 में मिला। पद्म भूषण सन् 1992 और पद्म विभूषण से सन् 2000 में नवाजा गया। उन्होनें बांसुरी के जरिए शास्त्रीय संगीत पूरी दुनिया में काफी लोकप्रिय बनाया।

प्र0 21 पाठ्यक्रम से चयनित किसी वाद्य के अंगों का विवरण दें। 2

उ0 पाठ्यक्रम से चयनित किसी वाद्य के अंगों का नाम केसाथ उनके विवरण देने पर पूरे अंक दिये जाये। 2

खंड (4) दीर्घ उत्तरात्मक प्रकार के प्रश्न

Section (4) Long answer type questions

(**2½ X 2 = 05**)

प्र0 22 राग खमाज की रजाखानी गत को स्वरलिपिबद्ध करें। राग भीमप्लासी का शास्त्रीय परिचय दें

(2½ + 2½) = 05

उ0 राग खमाज की रजाखानी गत लिखने पर पूरे अंक दिये जायें।

राग भीमप्लासी

थाट : काफी,

जातिः औडव–सम्पूर्ण

वादीः मध्यम (म)

संवादी : षड्ज (सा)

आरोहः नि़ सा ग म प नि सां।

अवरोहः सां नि ध प, म प ग म ग रे सा।

पकड़ : नि़ सा म, म प ग, म ग रे सा।

गायन समय : दिन का तीसरा प्रहर।

(अथवा)

(OR)

राग वृन्दावनी सांरग का शास्त्रीय परिचय दे

शास्त्रीय परिचय में थाट, गायन समय, जाति, वादी–संवादी, आरोह–अवरोह, पकड आदि के स्वर बताने पर पूरे अंक दिये जायें

थाट : काफी,

जातिः औडव– औडव

वादीः ऋषभ (रे)

संवादी : पंचम (प)

आरोहः नि़ सा रे म प नि सां।

अवरोहः सां नि, प, म, रे, सा।

पकड़ : नि़ सा रे, म, रे, प म, रे, नि़ सा।

गायन समय : दोपहर।